Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education

Vol. V, Issue IX, January-2013, ISSN 2230-7540

REVIEW ARTICLE

कंस वधम् महाकाव्य में रस–योजना

www.ignited.in

Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. V, Issue IX, January-2013, ISSN 2230-7540

कंस वधम् महाकाव्य में रस–योजना

Dr. Rakesh Kumar

Teacher

----------X----------

'रस' शब्द की व्युत्पत्ति एवं अर्थ :

रस पद √रस आस्वादनस्नेहनयोः' इस पाणिनीय धातु से अच् प्रत्यय करने पर निष्पन्न होता है । व्याकरणात्मक दृष्टि से पद की व्युत्पत्ति इस प्रकार है –

1. 'रस्यते आस्वाद्यते इति रसः' अर्थात् जिस पदार्थ का आस्वादन किया जाता है, वही रस है ।
2. 'रसनं रसः आस्वादः' अर्थात् जो आस्वादस्वरूप है, उसे ही रस कहते हैं ।
3. 'रस्यते अनेन इति रसः' जिन पदार्थों के माध्यम से आस्वाद किया जाता है, वह भी रस कहलाता है ।

ऋग्वेद में रस शब्द अनेक अर्थों में प्रयुक्त हुआ है । 'रसेन समगंस्महि'[1] इन मन्त्रांश में रस शब्द जलसार का बोधक है । 'महेयत पित्रई रसम्'[2] वहां रस का वाच्यार्थ है – पृथ्वी का सारभूत तत्त्व ।

रस का लक्षण :

समय–समय पर अनेक काव्यशास्त्रियों ने अपनी–अपनी दृष्टि से रस का लक्षण प्रतिपादित किया है, तथापि अर्वाचीन आचार्य विश्वनाथ का लक्षण अति स्पष्ट तथा परिमार्जित है ।

विभावेनुभावेन व्यक्तः स×चारिणा तथा ।

रसतामेति रत्यादिः स्थायीभावः सचेतसाम् ॅ[3]

अर्थात् काव्य के अन्तर्गत नायक–नायिका आदि आलम्बन विभाव, चन्द्रमा और उद्दीपन विभाव, अनुराग आदि को व्यक्त करने वाले स्तम्भ और स्वेद आदि अनुभव तथा निर्वेद आदि संचारी भावों से व्यि×जत सहृदयों का रति आदि स्थायी भाव सुपुष्ट होकर रसत्त्व को प्राप्त करता है ।

रस संख्या :

रसों की संख्या के विषय में आचार्यों की पृथक–पृथक मान्यताएँ रही हैं । आचार्य भरत[4] का अनुकरण करते हुए दण्डी[5], धन×जय[6], शिंगभूपाल[7] आदि ने रसों की संख्या आठ स्वीकार की है। रुद्रट ने अपनी कृति 'काव्यालंकार' में भरतप्रोक्त आठ रसों के अतिरिक्त शान्त एवं प्रेयान् नामक दो अन्य रसों के होने का विधान किया है ।[8]

इस प्रकार रसों की कुल संख्या दस हो जाती है । आचार्य दण्डी तक रसों की संख्या आठ तक रहने की बात प्रमाणित होती है। शान्त रस के प्रक्षेप का काल उद्भट[9] के काव्यालंकार सारसंग्रह से शुरू होता है । आनन्दवर्धन ने शान्तरस की स्वतन्त्र सत्ता को स्वीकार कर रसों की संख्या के विषय में कुछ न कहते हुए भी परोक्ष रूप से नौ के पक्ष का ही समर्थन किया है । मम्मट ने भी शान्त को नवम रस के रूप में स्वीकार किया है, जिसका स्थायीभाव निर्वेद को माना है ।[10] अतः रसों की प्रचलित एवं मान्य संख्या नौ ही है ।

कंसवधम् महाकाव्य में रसयोजना :

कंसवध महाकाव्य में मुख्य रस के रूप में वीर रस तथा गौण रसों के रूप में श्रृंगार, रौद्र, करुण आदि रसों का निबन्धन किया गया है ।

वीर रस :

आचार्य भरत ने अथ वीरो नामोत्तमप्रकृतिरुत्साहात्मकः[11] इस प्रकार कहकर वीर रस को प्रतिपादित किया है । यह वीर रस दान, धर्म, दया और युद्ध इन चार उपाधियों के कारण चार प्रकार का होता है – दानवीर, धर्मवीर, दयावीर, युद्धवीर ।[12]

युद्धवीर – कंसवधम महाकाव्य के सप्तदश सर्ग में भगवान् श्रीकृष्ण का कंस के साथ युद्ध करने का उत्साह का वर्णन किया गया है– कंसोच्चमचमचिरं..... त्वरितं पपात ॅ[13]

बलवीर – जब नायक आदि बल के प्रति उत्साहित हो वहां बलवीर होता है । कंसवधम महाकाव्य के चतुर्दश सर्ग का यह पद्य द्रष्टव्य है –

---

1. ऋ॰, 1.23.23
2. ऋ॰, 1.71.5
3. सा॰ द॰, 3.1
4. श्रृंगारहास्य करुणा..... नाट्ये रसाः स्मृता ॅ ना॰ शा॰, 6.15
5. का॰ आ॰, 2.81–291
6. श्रृंगारवीरबीभत्स..... त एव हि ॅ द॰ रू॰, 4.44, 4.35
7. अष्टधा स च श्रृंगारहास्या..... इतीरितः ॅ र॰ सु॰, 2.166–167
8. श्रृंगार वीर करुणा..... रसाः सर्वे ॅ रुद्रट, का॰ अ॰, 12.3
9. श्रृंगार–हास्य–करुण..... नव नाट्ये रसाः स्मृताः ॅ का॰ अ॰ सा॰ सं॰, 4.4
10. निर्वेदस्थायीभावोऽस्ति..... नवमो रसः । का॰ प्र॰, 4.35
11. ना॰ शा॰, अ॰ 6, पृ॰ 336
12. उत्तमप्रकृतिर्वीर..... समन्वितश्चतुर्धास्यात् ॅ सा॰ द॰, 3.232–34
13. कं॰ महा॰, 17.60

www.ignited.in

तमपश्च दुर्ध्वमशुभं..... सनष्टवान् ॅ[14]

दानवीर – जब नायक आदि निष्काम भाव से सर्वस्व दान के लिए उद्यत हो, वहां दानवीर रस होता है । कंसवधम् महाकाव्य के एकादश सर्ग में कंस द्वारा देवकी को दिए गए दान का वर्णन किया गया है ।

अन्यं स्वमित्रं..... हं स्वसु ॅ[15]

इस प्रकार प्रस्तुत महाकाव्य में वीर रस के अन्तर्गत पाण्डितय वीर, सत्यवीर, क्षमावीर आदि का विवेचन वीर रस के अन्तर्गत किया गया है ।

शृंगार रस :

शृंग का अभिप्राय है कामुक–युगल का उत्पीडक । काम उद्रेक का अर्थ है आविर्भाव । इस प्रकार शृंगार का अभिप्राय है कामभाव का आविर्भाव अथवा तीव्रता । शृंगार रस की उत्पत्ति काम के उद्भेद से होती है । इसमें नायक–नायिका आदि आलम्बन विभाव है । 'रति' स्थायी भाव ही शृंगार रस है । इस रस का वर्ण श्याम है तथा विष्णु भगवान् इसके देवता हैं ।[16] आचार्य विश्वनाथ ने इसके दो भेद स्वीकार किए हैं – सम्भोग और विप्रलम्भ शृंगार ।[17]

कंसवधम महाकाव्य के चतुर्थ सर्ग में उग्रसेन तथा पवनरेखा का प्रेम द्रष्टव्य है–

परिष्वज्योग्रसेनोऽपि..... तत्रोपचारताऽर्हति ॅ[18]

कंसवधम् महाकाव्य में द्रूमलिक का विरह वर्णन द्रष्टव्य है –

हाथ रेखेति..... इव चेष्टते ॅ[19]

यहां पर द्रूमलिक विप्रलम्भ शृंगार के रूप में आस्वाद्य हो रहा है ।

करुण रस :

इष्ट के नाश और अनिष्ट की प्राप्ति से करुण रस आविर्भूत होता है । शोक इसका स्थायी भाव होता है । करुण रस का कपोत–सदृश वर्ण है और यमराज इसके देवता हैं । करुण का उत्थान प्रिय–वियोग, बन्धुनाश, निराशा एवं द्रव्यनाश आदि अनिष्ट से होता है । कंसवध महाकाव्य के प्रथम सर्ग मं रानी की मृत्यु से राजा आहुक अत्यन्त शोकाकुल हो जाते हैं –

अचिनतुतसचतुर्थे..... प्रेतकृत्यं चकार ॅ[20]

इस प्रकार राजा आहुक अपनी रानी की मृत्यु से शोक ग्रस्त है। इसलिए यहां पर करुण रस परिलक्षित हो रहा है ।

रौद्र रस :

रौद्र रस 'क्रोध' स्थायीभाव वाला होता है । इसका प्रादुर्भाव राक्षस, दानव और उद्धत प्रकृति के मनुष्यों में परस्पर युद्ध से होता है। इसका वर्ण लाल और देवता रुद्र है । कंसवध महाकाव्य में एकादश सर्ग में आकाशवाणी की भविष्यवाणी सुनकर कंस देवकी के प्रति क्रोध प्रकट करते हुए कहता है –

कंसोगृहीत्वा स्वशयेन..... लतामपालयम् ॅ[21]

इसमें कंस का देवकी के प्रति रोद्र रूप दिखाया गया है।

अद्भुत रस :

आश्चर्यजनक वस्तुओं को देखने से अद्भुत रस की उत्पत्ति होती है। भरतमुनि ने अद्भुत रस के दो भेद बताये हैं– दिव्य और आनन्दज ।[22] प्रस्तुत महाकाव्य के प×चदश में ब्रह्मा अपनी मोहमाया से ब्रजभूमि के ग्वाले और बछड़े को निगल लेते हैं । एक वर्ष बाद जब ब्रह्म अपने किए हुए कार्य को देखने के लिए ब्रजभूमि में आते हैं तो वही ग्वाले और बछड़े देखकर आश्चर्यचकित हो जाते हैं–

किमिदमिह त एव..... मीक्षतेऽथः ॅ[23]

शान्त रस :

सांसारिक पदार्थों के प्रति 'निर्वेद' उत्पन्न हो जाता है जो शम का मूल है और यही पुष्ट होकर शान्तरस के रूप में अभिव्यक्त होता है । सत्त्वगुणसम्पन्न पुरुष के हृदय में स्थित शम नामक स्थायीभाव ही आस्वाद्य होकर शान्त रस प्राप्त करता है । प्रस्तुत महाकाव्य के तृतीय सर्ग में शान्त रस द्रष्टव्य है –

अतोऽद्यैवतप्तुं..... वांछेति मे ॅ[24]

प्रस्तुत पद्य में आहुक आश्रय तथा राजा उग्रेसन विषय आलम्बन विभाव, विषयों के प्रति वैराग्या भावना, उद्दीपन विभाव, भगवान का चिन्तन करने के लिए वन जाना, अनुभाव, निर्वेद, धैर्य आदि व्यभिचारी भाव हैं । सबसे पुष्ट होकर 'शम' नामक स्थायीभाव शान्त रस के रूप में आस्वाद्य हो रहा है ।

इस प्रकार 'कंसवधम' महाकाव्य में प्रयुक्त रसों के अवलोकन से प्रतित होता है कि इस महाकाव्य का मुख्य रस वीर है । जिसका इस महाकाव्य में सुन्दर तथा सफल प्रयोग किया गया है। गौण रस के रूप में करुण, शृंगार, रौद्र आदि रसों का प्रयोग भी प्रभावोत्पादक है । अतः कवि ने प्रसंगानुकूल रसोचित सामग्री का संयोजन करते हुए महाकाव्य में मनोहर रस–योजना उपन्यस्त की है।

14. वही, 14.4
15. वही, 11.16
16. शृङ्ग हि मन्मभोद्..... विष्णुदैवतः ॅ सा॰ द॰, 3.183–186
17. विप्रलम्भोऽयं..... द्विविधो मतः । सा॰ द॰, 3.186
18. कं॰ महा॰, 4.14
19. वही, 4.56
20. स्वापापस्मारदैन्या.....व्यभिचारिणः ॅ द॰ रु॰, 4.81–82
21. कं॰ महा॰, 11.58
22. दिव्यश्चानन्दजश्चैव..... ख्यातोऽद्भुतो रसः । ना॰ शा॰, 6.82
23. कं॰ महा॰, 15.43
24. वही, 3.49